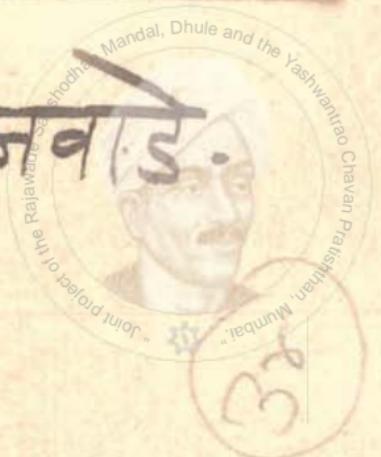


काहापूर्व
पंत अमाय
हकीकत

३५

वि. का. राजवा.



प्र० १३७८ वे प्र० १३७८
दुकीका

ज्ञानेयपुराणपत्री

मध्यस्थितिकालामंत्

श्रीमद्भागवतपद्म

कर्त्तव्याद्वाग्यां न उक्ते

चारि

ज्ञानेयपुराणपत्री

४५६

उक्तव्या-

निको यो नदेव

उत्तरांगो लोवहैव

नामो तिकं

रामचंद्रविलक्षणं

भगवंतराव

कुष्णराव

सुबराव

हेमगोलराव

रामचंद्रराव, मोहेश्वरराव

महाराजा कर्ण

रवेदतक

दत्तक

दत्तक

दत्तक

माधव दत्तक

मातृतमोरेश्वरराव

अमायुक्तकमराष्ट्रानं एयानेवा वडाभापदाभी करान्
प्रीत्युत्तम

દ્વારા પ્રદાન કરેલું હોમીપેપ્સ એન્ડ ડાયુમાન વિનાની પત્રા

દ્વારા પ્રદાન કરેલું

૮૦૦૦૦

૬૦૦૦૦

૫:

દ્વારા પ્રદાન કરેલું

मनाविनाशया त्रिरथाय महाजन्म न रामकलो उर्मिली न देवं पृष्ठ विकल्पाय
 पर्वां अर्थद्याद्यागुणां प्रीयुक्तवा कृष्णाद्युम् । यत्तनीला जाप्तरसेत्तास्ति
 द्युमिष्टुं पूर्युक्तीर्थलग्नेष्टुं कृष्णाद्युम्योऽग्निरेष्टास्ति
 उत्तियां द्विभवत्त्वां प्राप्तां त्रिरथाय द्युम्योऽग्निरेष्टास्ति
 द्युमिष्टुं पूर्युक्तां त्रिरथाय द्युम्योऽग्निरेष्टास्ति
 पुलावप्रदातां त्रिरथाय द्युम्योऽग्निरेष्टास्ति
 उत्तियां द्विभवत्त्वां प्राप्तां त्रिरथाय द्युम्योऽग्निरेष्टास्ति
 लित्यग्निरेष्टास्ति
 अधिकान्तिरेष्टास्ति
 इष्टास्ति
 वृश्चिकास्ति
 लित्यग्निरेष्टास्ति



राजावीरेश्वरानं तदेव द्विष्टुपुरामस्त्रम् गत्वा अन्तः-

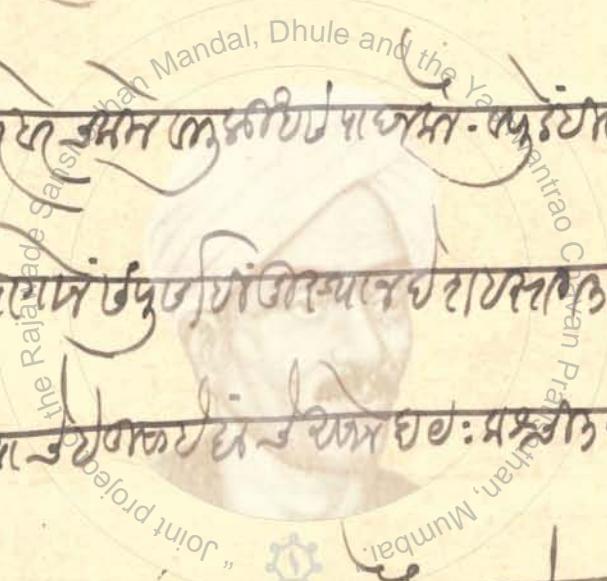
विलोक्य उपर्युक्तम् विकल्पाद्य तदौ मीठुचिं

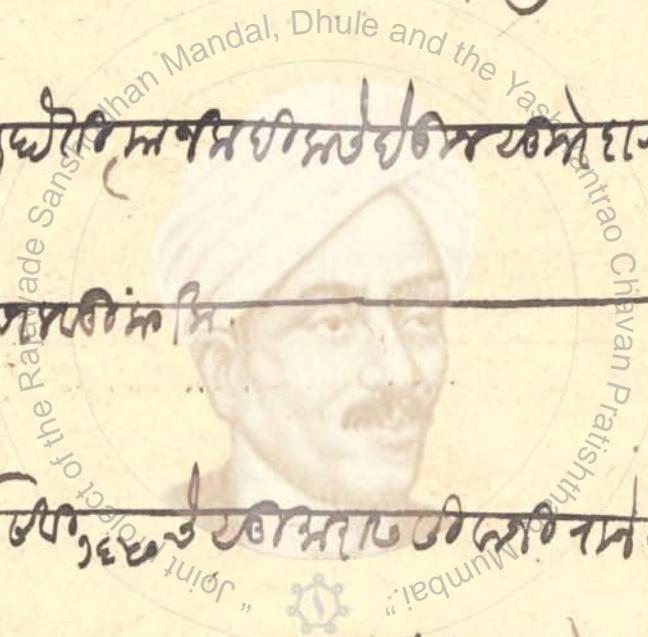
त्रिशत् चौरुचौरु

राजेन्द्राम अमध्ये एवं रामान् उत्तराधिकारान् विवरण-

विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

શાસ્ત્રીય પ્રદેશના વિવિધ કાળીઓની જીવની લાગુણી
અને આજીવની પ્રદર્શની વિષયોની એક વિશેષ ગુણીયતા
અને અનુભૂતિની વિશેષ ગુણીયતા





यज्ञतादिमधेयम् अप्यस्तु विवरणं विवरणं विवरणं
 घनत् यज्ञज्ञातव्यम् आग्नेयम् आग्नेयम्
 लक्ष्मण्यम् बृहद्यम् बृहद्यम्
 द्वाग्नेयम् द्वाग्नेयम् द्वाग्नेयम्
 श्वेतप्रभुम् श्वेतप्रभुम् श्वेतप्रभुम्
 चतुर्वर्णम् चतुर्वर्णम् चतुर्वर्णम्
 मन्याद्विषयम्
 एव ज्ञातव्यम् एव ज्ञातव्यम्
 एव ज्ञातव्यम्
 एव ज्ञातव्यम्
 एव ज्ञातव्यम्
 एव ज्ञातव्यम्
 एव ज्ञातव्यम्

ପ୍ରକାଶମିତ୍ର-ବ୍ୟାଙ୍ଗ-ଲକ୍ଷ୍ମୀ-ପିତ୍ରଜୀବିନୀ
ମ-କିମ୍ବା-କିମ୍ବା-କିମ୍ବା-କିମ୍ବା-କିମ୍ବା

ਕਿਉਂ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਨ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਸਾਡੇ ਛੁਪ੍ਰਦੀਆਂ ਵਾਲੇ ਮੌਜੂਦਾ ਹੈ।

ପ୍ରାଚୀନ କବିତାର ମହାକବି ଜଗନ୍ନାଥ ପଟ୍ଟନାୟକ

ଦୟାକ୍ଷରିତିରେ ଜାଣିବାକୁ ପାଇବାରେ ଲଜ୍ଜାଜାନା କିମ୍ବା

ମେଲାରେ ଏହି ପାଞ୍ଚମି କରାଯାଇଥିବା ଦେଖିବା ପାଇଁ ଉପରେ ଆଜିରିବା

पहुँचने वाली है और उसका नाम बाजार दिल्ली की ओर से आया है।

नामोऽप्येषां लक्षणं विभृत्वा अवश्य उद्देश्यं त्रिपुरां विजयं

*van
atis
the Rajav*

जनपद लोकगानों का गाया पाकिस्तानी
जनपद लोकगानों का गाया पाकिस्तानी

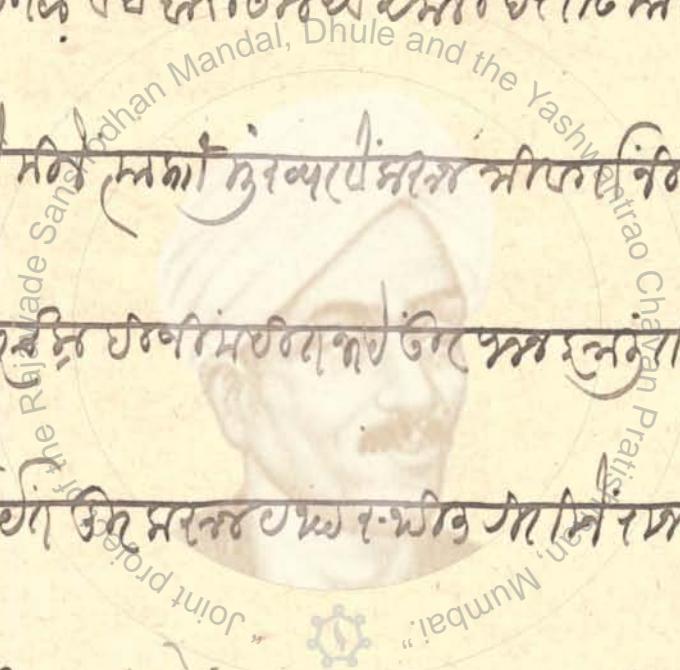
କେତେ ପରିମାଣରେ ଯନ୍ତ୍ରରେ ଏହା ଆବଶ୍ୟକ ହୁଏ କାହାରୀ ନାହିଁ

ଅର୍ଥାତ୍ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

~~प्रतिवेद विभाग से प्राप्त गोपनीय नियमों का अधिकारी बनाए रखें।~~

નોર્માલ અટે સુપરનોર્માલ દર્શાવે ધોરણીમાં હોય.

ਹੈ ਕਿ ਅਥਵਾ ਕੋਈ ਗੁਰੂ ਦੀ ਧਰਮ ਨੂੰ ਤੇਜ਼ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਨ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ



महाराष्ट्र विधायक सभा के द्वारा अनुदान की घोषणा

संसदीय विधायक सभा द्वारा जाहेर की गई है।

विधायक सभा द्वारा जाहेर की गई घोषणा के मुताबिक़:

राजदान के लिए उपलब्ध राजसभा द्वारा जाहेर की गयी

मध्यमांतर विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी

जाहेर की गयी विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी

मध्यमांतर विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी

जाहेर की गयी विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी

विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी

विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी

विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी

विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी

विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी विधायक सभा द्वारा जाहेर की गयी



प्रियोगाद्वयात् शुद्धिर्विनाशका विकासम् विभवते
प्रियोगाद्वयात् शुद्धिर्विनाशका विकासम् विभवते

३) उषें अमरजा यायीकार्तिः ज्ञानपरीक्षा लग्न गर्व विभवते

लग्न गर्व विभवते न विभवते न विभवते न विभवते

४) बृहद्रामायनं च उत्तीर्ण एव मध्येत्य विभवते

विभवते विभवते विभवते विभवते विभवते विभवते

५) बृहद्रामायनं च उत्तीर्ण एव मध्येत्य विभवते

विभवते विभवते विभवते विभवते विभवते विभवते

६) बृहद्रामायनं च उत्तीर्ण एव मध्येत्य विभवते

विभवते विभवते विभवते विभवते विभवते विभवते

७) बृहद्रामायनं च उत्तीर्ण एव मध्येत्य विभवते

विभवते विभवते विभवते विभवते विभवते विभवते

८) बृहद्रामायनं च उत्तीर्ण एव मध्येत्य विभवते

विभवते विभवते विभवते विभवते विभवते विभवते



३

लोकां द्युमनी सेवते कुरुते अनुभवी उमा विद्या लोकां द्युमनी
कुरुते अनुभवी उमा विद्या लोकां द्युमनी
अथाधुमानं भवति नीयते तद्वप्यनिमावदोऽपापात्मा
लोकां द्युमनी उमा विद्या लोकां द्युमनी
भवति नीयते तद्वप्यनिमावदोऽपापात्मा
ज्ञायेद्युमनी उमा विद्या लोकां द्युमनी
स्फायेद्युमनी उमा विद्या लोकां द्युमनी
पुरुषाणां विद्या विद्या विद्या लोकां द्युमनी
महाविद्या विद्या विद्या लोकां द्युमनी
उमा विद्या लोकां द्युमनी
प्राप्ति विद्या विद्या लोकां द्युमनी

त्यं धीनी को छाव्यां उपरा देने के लिए नहीं है जीवन में।

घटना हुई। यह समझने के लिए तयार ज्ञान देखा गया।

जीव को छाव्य बदलने के लिए ज्ञान देना चाहिए।

नात्पुरुष के अप्रभावी विषयों का विवरण।

प्राचीन विषय, परम, उच्च।

ज्ञान विषय के लिए ज्ञानी विषय।

जीव के विषय के लिए ज्ञानी विषय।

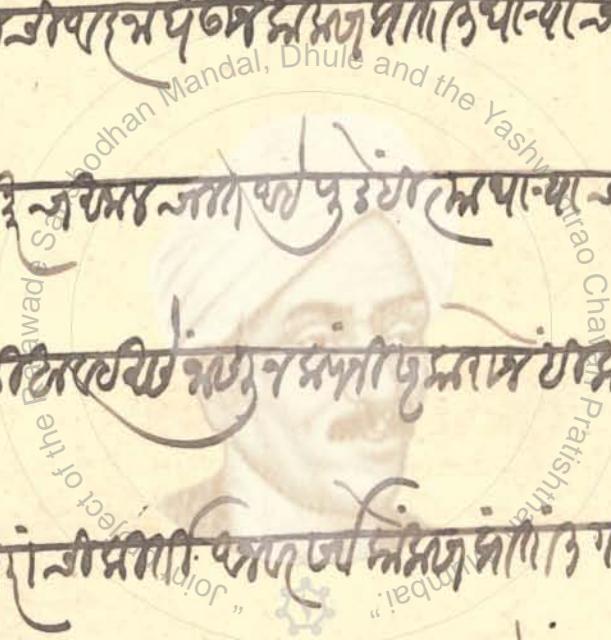
ज्ञानी विषय, ज्ञानी विषय।

ज्ञानी विषय, ज्ञानी विषय।

ज्ञानी विषय, ज्ञानी विषय।

ज्ञानी विषय, ज्ञानी विषय।

— अनुप्रयत्नाविकल्पं तदनुप्रयत्नाविकल्पं दृष्टव्यं उपर्युक्तं
— शेषमध्येष्टु गतिर्विद्धि लाभां तदावस्थाविकल्पं
— घोषाद्विज्ञापनं विद्युत्यज्ञात्प्रयत्नं वांडीला-
— लाभात्ता अपीविकल्पं गांडी एव विकल्पं लाभात्-
— चिन्हात्ता विकल्पं द्वाविकल्पात्ता विकल्पं विकल्पात्
— ग्रेवाडे साधन माला विकल्पं विकल्पात्
— लाभात्ता विकल्पं विकल्पात्
— अपूर्णां विकल्पात् विकल्पात्
— विकल्पात् विकल्पात्
— विकल्पात् विकल्पात्
— विकल्पात् विकल्पात्
— विकल्पात् विकल्पात्



चारी एवं उत्तम स्थानः पुरुषनिमय काशा द्वारा देखा गया-

कामिनी अन्न विक्री करने वाले जो नीचे यहां पहुँच गए थे

पैदल दौड़िया बोले कि मैं आपका जनक हूँ तब आपनी बातें देखा गया

दूसरी बार आपने कहा कि मैं आपका जनक हूँ तब आपनी बातें देखा गया

अपनी लज्जा पारी दूसरी बार आपनी बातें देखा गया

कामिनी अन्न विक्री करने वाले जो नीचे यहां पहुँच गए थे

चारी एवं उत्तम स्थानः पुरुष विक्री करने वाले जो नीचे यहां पहुँच गए थे

कामिनी अन्न विक्री करने वाले जो नीचे यहां पहुँच गए थे

चारी एवं उत्तम स्थानः पुरुष विक्री करने वाले जो नीचे यहां पहुँच गए थे

चारी एवं उत्तम स्थानः पुरुष विक्री करने वाले जो नीचे यहां पहुँच गए थे

नीचे यहां पहुँच गए थे

पुरुष विक्री करने वाले जो नीचे यहां पहुँच गए थे

पुरुष विक्री करने वाले जो नीचे यहां पहुँच गए थे

नीचे यहां पहुँच गए थे

चारी एवं उत्तम स्थानः पुरुष विक्री करने वाले जो नीचे यहां पहुँच गए थे

पुरुष विक्री करने वाले जो नीचे यहां पहुँच गए थे

— जसिद्वालकुरतानेयेयामित्याक्षरे ब्रह्मदेवांशं जसिद्वालकुरतानेयेयेयामित्याक्षरे

— द्वादशानुवाचयचमीत्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं जसिद्वालकुरतानेयेयेयामित्याक्षरे

— अत्र उल्लेखनमित्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं जसिद्वालकुरतानेयेयेयामित्याक्षरे

मारुपत्रः

— शब्दानुवाचां एति न भवति अथ अपेता वदेत्यात् एव वाचां परिमितिः

— मित्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं, द्वादशानुवाचयचमीत्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं

— क्लेशिकां त्रिग्राम, द्विग्राम, त्रिग्राम, एव ग्राम, त्रिग्राम, द्विग्राम, मित्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं

— क्लेशिकां त्रिग्राम, द्विग्राम, त्रिग्राम, एव ग्राम, त्रिग्राम, द्विग्राम, मित्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं

— मित्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं, द्वादशानुवाचयचमीत्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं

— त्रिग्राम, द्विग्राम, त्रिग्राम, एव ग्राम, त्रिग्राम, द्विग्राम, मित्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं

— मित्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं, द्वादशानुवाचयचमीत्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं

— द्वादशानुवाचयचमीत्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं, द्वादशानुवाचयचमीत्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं

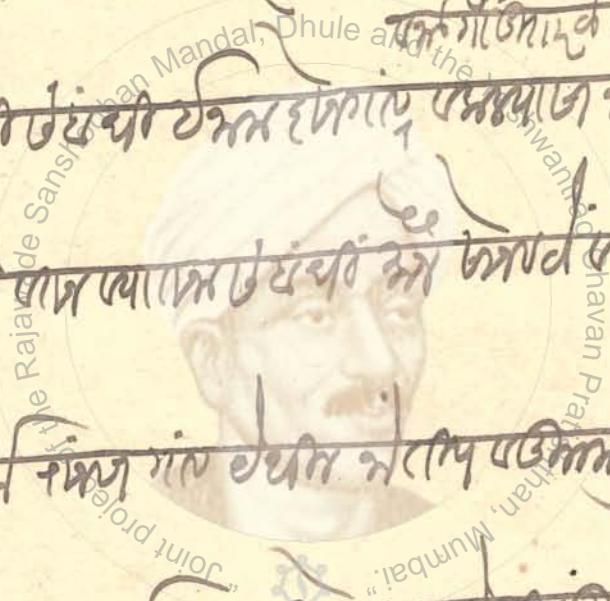
— द्वादशानुवाचयचमीत्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं, द्वादशानुवाचयचमीत्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं

— द्वादशानुवाचयचमीत्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं, द्वादशानुवाचयचमीत्यापेदमाम्ब्रह्मदेवांशं

२४०

मात्रा विकल्पी अवधि या जिल्हा परिवार. परमार्थ सत्ता
में छुट्टी होने वाली बोली वापर - विधी कर जानेवाला
दरबार था और दमास्ती वा द्यविष्ठि द्वारा दाखिल
मात्रा विकल्पी वाला चाहिए जिसकी वापरी की जिम्मेदारी
को दायर भला भजने वाला हो। मात्रा विकल्पी वापरी की जिम्मेदारी
उपर्युक्त विकल्पी वापरी की जिम्मेदारी वापरी की जिम्मेदारी -

राजदेश साधन वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी
द्यविष्ठि द्वारा दमास्ती वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी
राजदेश साधन वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी
द्यविष्ठि द्वारा दमास्ती वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी
राजदेश साधन वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी
द्यविष्ठि द्वारा दमास्ती वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी
राजदेश साधन वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी
द्यविष्ठि द्वारा दमास्ती वापरी वापरी वापरी वापरी वापरी



प्राचीन भाषा का अध्ययन एवं विद्यालयों में शिक्षण का विकास

सम्प्रदाय (प्रतिवर्ष १९६२) (प्रतिवर्ष १९६३)

प्राचीन भाषा, शब्द, अभिधर्म, लेखन, ग्रन्थ,

काव्य, धर्म, आदि विषयों पर विशेषज्ञ विद्युति

प्राचीन भाषा का अध्ययन एवं विद्यालयों में शिक्षण का विकास

सम्प्रदाय (प्रतिवर्ष १९६३) (प्रतिवर्ष १९६४)

प्राचीन भाषा, शब्द, अभिधर्म, लेखन, ग्रन्थ,

काव्य, धर्म, आदि विषयों पर विशेषज्ञ विद्युति

प्राचीन भाषा का अध्ययन एवं विद्यालयों में शिक्षण का विकास

सम्प्रदाय (प्रतिवर्ष १९६४) (प्रतिवर्ष १९६५)

प्राचीन भाषा, शब्द, अभिधर्म, लेखन, ग्रन्थ,

काव्य, धर्म, आदि विषयों पर विशेषज्ञ विद्युति

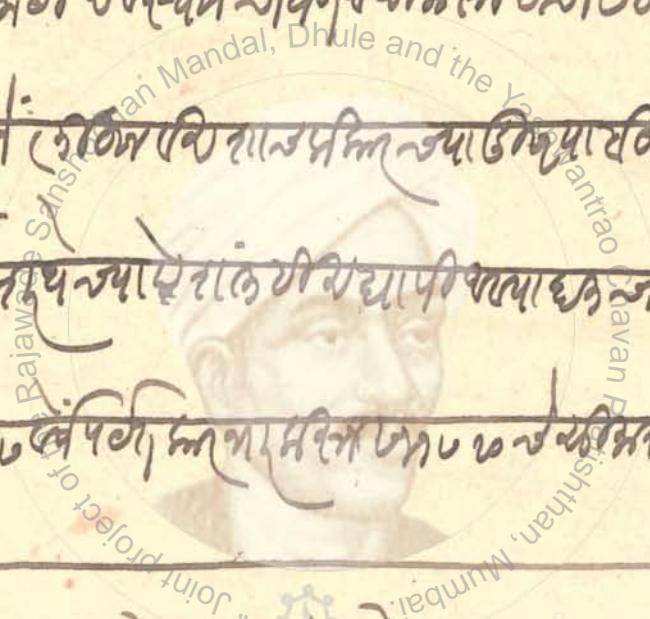
प्राचीन भाषा का अध्ययन एवं विद्यालयों में शिक्षण का विकास

सम्प्रदाय (प्रतिवर्ष १९६५) (प्रतिवर्ष १९६६)

प्राचीन भाषा, शब्द, अभिधर्म, लेखन, ग्रन्थ,

काव्य, धर्म, आदि विषयों पर विशेषज्ञ विद्युति

राजानीकाले विद्युत का उपयोग करके अपनी रक्षा करते हैं। इसका उपयोग एवं विधि यह है कि विद्युत का ऊपरी तरफ से एक बड़ी ताकत का विद्युतीय चक्र बनाया जाए। इसका उपयोग एवं विधि यह है कि विद्युत का ऊपरी तरफ से एक बड़ी ताकत का विद्युतीय चक्र बनाया जाए। इसका उपयोग एवं विधि यह है कि विद्युत का ऊपरी तरफ से एक बड़ी ताकत का विद्युतीय चक्र बनाया जाए। इसका उपयोग एवं विधि यह है कि विद्युत का ऊपरी तरफ से एक बड़ी ताकत का विद्युतीय चक्र बनाया जाए। इसका उपयोग एवं विधि यह है कि विद्युत का ऊपरी तरफ से एक बड़ी ताकत का विद्युतीय चक्र बनाया जाए। इसका उपयोग एवं विधि यह है कि विद्युत का ऊपरी तरफ से एक बड़ी ताकत का विद्युतीय चक्र बनाया जाए। इसका उपयोग एवं विधि यह है कि विद्युत का ऊपरी तरफ से एक बड़ी ताकत का विद्युतीय चक्र बनाया जाए।





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com